

क्या इन्सान को अंतरिक्ष में भेजना ज़रूरी है?

कई अंतरिक्ष वैज्ञानिक यह सवाल उठा रहे हैं कि क्या मानव को अंतरिक्ष में भेजकर हम कोई ऐसा ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं जो मानवरहित अभियानों से प्राप्त नहीं किया जा सकता। अंतरिक्ष वैज्ञानिक फिलिप बॉल को लगता है कि मानवसहित अंतरिक्ष अभियानों से ऐसी कोई जानकारी नहीं मिलती जो तत्काल ज़रूरी हो या जिससे विज्ञान छलांग लगाने लगे। खासकर यह बात तब ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है जब मानवरहित अंतरिक्ष अभियान के सस्ते विकल्प मौजूद हैं।

जैसे हाल ही में युरोपियन स्पेस एजेंसी का फोटॉन-3 मिशन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस अभियान की खास बात यह थी कि युरोप के करीब 450 छात्रों ने इसमें भाग लिया और कई महत्वपूर्ण प्रयोग किए गए। जैसे, इस अभियान के दौरान यह समझने के प्रयास किए गए कि अंतरिक्ष से बैक्टीरियानुमा जीव के पृथ्वी पर पहुंचने की कितनी संभावना है।

वैसे इनमें से कोई भी प्रयोग ऐसा नहीं था जिससे विज्ञान में किसी नाटकीय प्रगति की अपेक्षा की जाए मगर मानवसहित अभियानों में भी तो यही स्थिति होती है। मानवसहित अंतरिक्ष अभियान कम से कम दस गुना महंगे होने के अलावा खतरों से भरे भी होते हैं। अंततः अधिकांश वैज्ञानिक शोध धीमे-धीमे क्रमशः ही होता है। और छात्रों का जुड़ाव

फोटॉन-3 मिशन का अतिरिक्त लाभ था।

फोटॉन-3 मिशन पूरी तरह यंत्रचालित था। अतः यह सवाल उठ रहा है कि जब यह संभव है तो मानव



मिशन भेजे ही क्यों जाएं। जैसे यदि यह देखना है कि शून्य गुरुत्व की स्थिति में अंतरिक्ष यात्रियों की हड्डियों की वृद्धि पर क्या असर पड़ता है, तो पहली बात तो यह है कि आप यह क्यों देखना चाहते हैं? बताया जाता है कि इससे भविष्य में अंतरिक्ष यात्रियों को बेहतर तैयारी के साथ भेजा जा सकेगा। मगर यदि रोबोट्स वही काम कर देते हैं तो इन्सानों को वहां भेजना ही नहीं पड़ेगा। दूसरी बात यह है कि ऐसे ही अध्ययन जंतुओं के ऊतकों की मदद से भी किए जा सकते हैं। फोटॉन-3 मिशन में ऐसा एक प्रयोग किया भी गया है।

दूसरी ओर, रॉयल एस्ट्रॉनॉमिकल सोसायटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि मानव अभियान बहुत ज़रूरी हैं क्योंकि इनसे हमें चिकित्सा सम्बंधी विशिष्ट जानकारी मिलती है। वैसे सोसायटी ने स्पष्ट नहीं किया है कि यह 'विशिष्ट' जानकारी क्या है। लगता है कि मानवसहित अंतरिक्ष अभियानों का ग्लैमर ही उनकी शक्ति है। (स्रोत विशेष फीचर्स)